Chapter-1

क्षणि : १ : 
लक्ष्ण निर्विर्ध - परिमाणा और रूप
गान विषय का एक प्रयोग-निबंध

हस्तित्व कपिल युगीन प्रतिक्रियाकारों और सहवानों का लिखित रूप है।
कोई भी विषय अपने युग का प्रतिनिधित्वकर्ता प्रस्तुत करती है। वैसी संसार में हस्तित्व
का प्रथम रूप प्रस्तुत करता है। क्योंकि प्रथम प्रस्तुत रूप में हुआ करती थी। प्रथम
की अपेक्षा गान की रचना महत्वपूर्ण समझी जाती है। वह हस्तित्व का कपिल युगीन
की अपेक्षा गान की रचना महत्वपूर्ण होती है। वहीं तो "गान कपिलनाथ" निबंध से कहकर
गान की कपिलनाथ की क्षेत्रीय माननी गया है। कपिलनाथ रामचंद्र शुक्ल ने कहा है -
"निबंध गान की क्षेत्रीय निबंध होते हैं" कहने का तत्परता यह कि निबंध तो क्षेत्रीय की भी क्षेत्रीय
है। कपिलनाथ गान हस्तित्व का इतिहास भिषज पुराना नहीं है। फिर निबंध तो उसके बारे में भी विचारित स्वरूप है।
अतः वह और भी कपिलनाथ विषय है। यह निश्चित है कि कुछ पहले यदि कुछ पहले कुछ लोगों राजा किशोराय लिखा हैं, तो उन्होंने निबंध की संज्ञा से अभिव्यक्ति नहीं किया जा सकता।
उन्हें गान का रूप ही अभिभावक है। किन्तु निबंध के स्वरूप की स्थापना नहीं है।

कुछ विद्वानों ने पं॰ सदासुबलाल के "सुरासुर निर्णय" को प्रथम निबंध माना
है। हस्तित्व पं॰ सदासुबलाल की प्रथम निबंधकार माने जाते हैं। इसकी भावना गान का
तत्कालीन स्वरूप क्रमशः प्रस्तुत करती है जो वंडालापन से विविध है। इसके
बाद कपिलनाथ की तक निबंध और कपिलनाथ की रचना सामने नहीं आये।
निबंध के रूप में स्वामी पद्मानंद सरस्वती और नवराम फुलचंद्री के रूप में मिले हैं।
कुछ लोग तो यहीं है निबंध का प्रादूर्भाव मानते हैं। स्वामी की बूढ़ी रामायणों का पुराण जोरों
पर था, वे अपने रामायण के पुराण-पुराण का पद्मावती रीति-रिवाज व्यंग्य को
निकृष्ट बनाने के लिए परस्पर प्रस्ताव कर रहे थे। स्वामी की बूढ़ी रामायणों के मनो
स्वामी के मनो पुराण का बंदन के और पत्रस्वामी का प्रमाण किया।
उन्होंने अपने लेखों में जातिव्यतिक्तता कहे बालङ्गों पर अपने विचारों को प्रस्तावित किया।
लाज़: उनकी जातीय बालङ्ग-प्रत्याशापूर्वक निर्विवाद के रूप में पाठकों के सामने आते रहे।
उसी समय राष्ट्रीयता की माँ होकर उनके लिए स्थानीय बैले रूप व्यक्त करना चाहिए। भारतीय नगर के राष्ट्रीयता की भावना में अपना लिए रूप धारण कर लिया था। माराठेन्द्री जी के पूर्व तक जो भी लिखा जाता रहा है वह उस कौटि का नहीं था। साहित्य के लिए माराठेन्द्री जी अद्यावधि सिद्ध हुए।

प्रारम्भ में गर्व साहित्य क्षणतक ही रहा। अपने पाठकों की रानी से ठीक प्रकार से पीछे भी नहीं दी पाते थे। बीते-बीते पर-परिवारों की सुविधा उपलब्ध होने पर एक दूसरे के विचार-विचार के रूप में होने लगे। एक बार यह भावना बना कि जब उन लोक भी सामने लाया जाये वह कही उपलब्ध और अधिक होना चाहिए। लाज़ीक जो तीन प्राप्त होते जी के साथ अपने और विचारों की प्रकटता का विषय वहीं होता रहता था।

भारतेन्द्री युग हिंदी गर्व की वास्तविकता का युग था। गर्व के पूर्व पूरा साहित्य पथमाय था, परन्तु यह युग तक आते-आते परिवर्तन में रहा था। गर्व के पूर्व पूरा साहित्य पथमाय था, परन्तु यह युग तक आते-आते परिवर्तन में रहा था।

छ्या गर्व प्राय: आधुनिक काल में गर्व की केवल साहित्य रचना का जो क्षण
विशेषरूप से परिपूर्ण, गुण-सामाजिकता तथा व्यक्त बना और बनता चु रहा है
उसका नाम है निकृष्ट। अपनी बाकृपता के कारण वह विद्वान साहित्य विश्वास के
जीवन में अपने दिशाशीत में प्रसारित भूमिका होती है। निकृष्टी की व्यक्तिका का कारण
उसकी बाकृपता के वतिकित उसकी बाकृपता भी है। भाष्यां के हैं कि निकृष्ट के 
बाकृपता अलग प्रकार का और गुण साहित्यिकता के कारण आधुनिक काल के साहित्य
पर उच्चरोच खाता जाता रहा है।
निवंच हिन्दी का तत्सम शब्द है। संस्कृत की निवंचानु (निव+वंच) लगाकर दो अक्षर-खण्ड प्रत्ययों के योग से हो निवंच-निवंच भूतपूर्व का तत्सम शब्द होता है। वास्तविकता के अनुसार निवंच-निवंच से निवंचित विषय विशाल सन्तुष्ट क्षण में निश्चित रूप से किसी विचार पर विचार की शृंखला बांधता, रोकना, संपूर्ण करना बाधित। न जटाया के अनुसार निवंच-निवंच से निवंच का बुध और उसके संवरण से कुछ रोग का निरोध होता है। किन्तु शब्दों के भूतपूर्व होठ की सदा निवंच में नहीं आते। कारण में उनके अंत में निवंच या संकोच स्वाभाविक-रूप से होता रहता है। कोणारुपों में रूप एवं अचूक युग में वह विशेष में निवंच शब्द के निवंच चारे प्रमाण है। भी बांधना किरण आस्ती बारे बारे बाचक संस्कृत शब्दकोष में निवंच शब्द के निवंचित वार्ता लेकर दिया गया है। 1 बांधना, अठाना(2) लाख-लाखकित(3) रचना, लिखा(4) कोई साहित्यिक टीका या कृति (5) संघ (6) संपूर्ण, वाचा, रोक(7) पुराणचारित(8) शब्द (8) संस्कृत का दान, प्रश्नों का युद्ध या त्रय का भाग किसी भी सहयोग के लिए वांच देना(10) निवंचित-का(11) नीच-उद्धति(12) कारण-हैं। उनके अनुसार निवंच-निवंच से सर्वनाश इति बांधकर निवंच-निवंच। जिसमें विचार बांधना करना दुहे अर्थ आता है है तैयार रचना। संस्कृत साहित्य में व्यक्तुत्व निवंच शब्द पर विचार करते हुए लाचारी व्यक्तिमात्र किसी ने लिखा है "प्राचीन संस्कृत साहित्य में विचार नाम का एक कला साहित्यांग है। इन निवंचों में कौशलशीर्ष सिद्धांत की विवेचना का डंग यह है कि फिरे पूर्वता में भूल से प्रमाण उपस्थित है जाते हैं, जो देखकर अभी अभी सिद्धांत के प्रतिकृत पहुंचते हैं। फूल पत्ताओं यह जहाँ का एक-एक करके अर्थमान में जला विचार जाता है। सबी शक्तियों का समाचार हो जाने के बाद अर्थमा के सिद्धांत की युग्म में हुई और प्रमाणों का निवंच होता है लोगितिये उनका निवंच करते हैं। तिनमें निवंच शब्द का प्रयोग एक ओर तो "सिद्ध" के फ़ायदे के रूप में उल्लिख्य या स्वतंत्र निवंचों के लिए होता है और दूसरी ओर उन रचनाओं के लिए भी होता है जिनमें
किसी विषय का सुसंबंध निवेदन प्रस्तुत किया जाता है। हवल्यू बेसिल वर्सफील्ड के महात्मागुरु निवेदन से ताल्मय ऐसी रचना है जिसमें अलक निवार्याचार्य के साथ बहुत कुछ अपने मामले और मनोवृत्तियों को भी निरालों ढंग से व्यक्त करता चलता है। वर्सफील्ड ने ऐसे और इंटरेस्ट बनाये हुए हिस्से में पैद कराते हुए कहा है कि -

निवेदन का प्रवर्तन से वही सम्बन्ध है जो रैलार्जीन का पूर्ण निर्भर है संबन्ध है। निवेदन में

गुणा और स्वरूप भी वही होते हैं जो किसी प्राकृतिक रचना या रैलार्जीन में। ऐसे निवेदन में अपने उन मामलों का समालेख करता है जो किसी वस्तुसंरचना का क्रियान्वयन करते हुए उसके परिवर्तन पर पहले हैं। ऐसी वाणिज्यीय रचना ने अपने एकत्रीक -संपूर्ण कोष में 'दुर्गापात्र' और धर्म धर्मों के लिए निवेदन और प्रवर्तन दोनों स्तर किए हैं।

भाषास्त्र के अनुसार निवेदन के लिए विवरण का क्रम एक प्रकार है - निवेदन शब्द का

मूल वाच्यात्मक है - संबंध कर सीना - जो कि लोग में भाषा के हीने के लिए तक ही सीमित रहा। यह शब्द उस शब्द के लिए प्रतिमातृत्र होने लगा जिसमें किसी निवेदन के

सम्बन्ध में अनेक व्यासान भ्रमितांत्र बौध स्तर के रहते थे।

फ्रेंच साहित्यिक न्यायाशीर्ष मानते हैं इस विषय के ज्ञाता माने जाते हैं।

निवेदन ही एकमात्र ऐसा साहित्य रूप है जिसके गौत्र, नाम और जन्मतिथि का हर्ष

निश्चितपूर्वक बोध है। नाटक, प्रकाश, लघुत्तम, उपन्यास आदि के मूल्यग्रह युक्ते के रूप से कुशल जाते हैं। केवल निवेदन ही ऐसा साहित्य रूप है जिसके सन्- संबंध का

केला-जीवता उपलब्ध है - जिसके पूर्व उसका व्यक्तित्व नहीं पाया जाता और जिसके पर्यावरण

उसका व्यक्तित्व अविनाशीन में रहता कहा जाता है। है। केवल इन्द्राश्चलोपिटाडिया

संगीत इंस्ट्रेक्टर में ऐसे 'श्रीकृष्ण निवेदन' में यह टिप्पणी दी गई है - किंतु वैकन के समय

से इस शब्द (निवेदन) का प्रयोग कुछ-कुछ मेधवौच रहित किया जाता लगा है। इसका उपयोग

लाज परस्पर एक दूसरे है जिन्हें दृष्टि के भेंट के लिए किया गया मिलता है - गंगीर और

विद्याध्यायों में प्रथा दुर्गापात्र है अकादिक विस्मय स्तर के हीने के

मानवीयता तक के भेंट इस शब्द से अभिभूतित किया जाता है।
निबंध की परिभाषा:

निबंध के जन्मादाता पौनः ने अपने को ही अपने निबंधों का विषय कहा वक्तकि वह अपने को की पूरी तरह जानता था। डॉ. जानसन की परिभाषा में वह अप्रेरभित को व्यक्ति विशेष तत्व का विषय कहा गया है। नामात्मक गठबस्थात्मक की वाक्यक सूचना में व्यक्ति विशेष तत्व करते हैं परन्तु वह ती निबंध के एक विशेषता मात्र हुई, परिभाषा नहीं। प्रशिक्षण समीक्षा के आधार पर निबंध विकल्प ने "इससे" में साहित्यिक सार्वजनिक का रूपांतर किया है। उन्होंने अपनी प्रशिक्षण पुस्तक "दि इसे कार्ट एण्ड लीजिज" में लिखा है कि इसे छोटा होना चाहिए उसमें साहित्यिकता के साथ विचारों की वह जान-सच्चाई स्थापित निर्माण में है। नास्त्राय, नामक संपादक ने अपने विचार से इससे की एक क्रोटी परिभाषा दी है-- इसे किसी विचार के सारण में सारण कहा रहता है। नामात्मक लाभांने इसे की परिभाषा- "हैसियत सिखने वाली सीरिज में इस प्रकार दी है-- "साहित्यिक दार्शनिक या सामाजिक विषय पर वैज्ञानिक या वैज्ञानिक तृष्णिकोण से लिखी हुई रहता।"। सच्चा निबंध रहस्यालाप या प्रेम से किस हुए संहार के समान होता है और यही माननी जो निबंधकार होते हैं पाठकों से उनकी विचारणीय चुनौती से भरी हुई तथा ब्रह्मावलोकन होती है निबंधकार एक-एक शब्द अपने ही सारण में बोलता है। उसका जीवन बन्दीकए की आकृति को व्यक्त करता है। "कैसे के कुछ कार्य विशेष गय की वह क्रोटी एवं समूह रहता है किसी कैसे अपनी व्यक्तित्व भावनाओं, अनुमानियों और विचारों का अन्त प्रत्यक्ष एवं विषय रूप से सरल जीवन में स्वतंत्रता से करता है। प्रिस्टले का कहना है अगर सच्चे निबंधकार का कोई विषय नहीं होता या यदि लाग चाहें तो तब जगत का हर विषय उसके अविचार में होता है। उसका सत्तर कारण है कि उसका काम अपने को या किसी विषय से अपने सन्ध्याको अभिव्यक्ति करना होता है। तथा निबंध एवं संहार या शालारंग वालों के निकट पहुँचता है और निबंधकार वह दृष्टिशाली और ब्रह्मावलोकन का उपक्रम है किसी प्रश्न पर उसके व्यक्तित्व से आवश्यकता रहता है।" 99 गार्डनर का कहना है कि निबंध के विषय तो विचारों को टांगने के लिए एक छुट्टी पर है। 100
एलेखान्डर सिंह का मत है कि साहित्यिक निवंच मुक्तक सदृश है। और कि यह भी किसी केन्द्रीय मन:स्थिति से ही निर्मित होता है। वाले पावल का हो, गम्भीर हो या उत्पाल का ही क्या न हो। मन:स्थिति के उपस्थित होने की निवंच वह तार उसके चुंबक विकसित होने लगता है और तारते के कीड़े के चुंबकिक मध्य विकसित होता है।

केन्द्र ने निवंच पर ही एक निवंच शिक्षा है जो कहता है निवंच एक प्रकार का विचारवाद या मानस की वह दशा है जिसमें बाद्वी कहता है तो जन्म है कुछ कहता है।

मन कहता है।

निवंच के चौथे में एक प्रकार से लूक्स को घेर की गात्मा ही कहता है। जो निवंचकर उन्हें अर्थ अर्थ:प्रतीत होते हैं, उनकी प्राणों वे इसलिए करते हैं कि उनका मानस चीजों के नीचे फड़े मुक्केबाज़ों के नीचे के समान है- बाप उसकी सारी किया को देख सकते हैं। यहीं वह अपने दृष्टि को बास्तीन पर फिर फिरता है। लूक्स की दृष्टि में निवंच भेद्भाव वाला भाव का एक दर्जन है।

सन्तु १६६४ में प्रकाशिते ए कुक बाप- इंग्लिश सर्जेंट की मूलिका में डब्बू हैं विषम्पथ ने शिक्षा है कि यह गय रचना का एक प्रकार है जो बहुत छोटा होता है और जिसके केवल वर्ण नहीं होते। कही-कही निवंच-कर कही वात की सिद्ध करने के लिए प्राणों का वात्त्मक वह सकता है। कही उपन्यासकार की माति तात्र सुस्पष्ट भी कर सकता है परंतु उसका मूल उद्देश्य क्यों करता नहीं है।

निवंचकर का सुभाष काय तात्त्विक, वात्त्मक, अनुसूचीक या टिप्पणीकार भी करता है। एडाग्यान के उत्तरार- निवंच में विचारवाद तरल गौरी मिलित होती है। उसका प्रकार भी वात्त्माक उपवेद्यकत्व की और उत्तर रहता है, कही नैयायिक गतमा-भियांतर की और।

सन्तु १६३३ के क्रॉस में इस प्रकार परिमाण दी है एक निवंच एक सानारण के ठिकम रहना है जिसमें किसी विष्णु या विषयांश पर विचार-विमृण होता है। वार्षिक में इसमें क्षुप्तिप्रतीत का अव्याक रहता था, परंतु वह उसके प्रवयोग से ऐसी रचना का बोध होता है जिसका विस्तार परिमित रहने पर भी शैली प्राप्त और परिश्रम है।

किन्तु में की लीक विद्यार्थि की निवंच की विविध परिमाणाएँ, प्रस्तुत की हैं। जो इस प्रकार है।
डौ अन्नानाथप्रसाद शर्मा के सतापुत्र तक और पुरीता का बच्चा चिनार
रखनेवाला गाँव रचना का वह प्रकार निबंध कहता है जिसमें किसी विषय का
विश्लेषण का लघु विषय साथ स्वच्छंदता एवं राजनीतिक पूर्ण ऊंच है ऐसा कथन है
कि उसमें शेष का व्यक्तित्व फूल है। ८५ आचार्य पं. रामचन्द्र मुकुल ने लिखा है-
"बालकिन पाश्चात्य उपाध्याय उपाध्याय के अनुसार- निबंध उसी को कहना वास्तव जिसमें व्यक्तित्व
क्यों है व्यक्तित्व विश्लेषण है। मुकुल जी ने निबंध को गंगीर चिनार प्रकाशन ही
माना है। उन्होंने कहा है कि यदि गाँग कवियों या लेखकों की क्षैति है तो निबंध
गाँग की क्षैति है। भाषा की पूर्ण चित्रकृति का विषय निबंधों में ही सबसे व्यक्ति संक्षेप
होता है। रणी गाँग जैसी के विनाशक उदाहरणों के लिए व्यक्ति निबंध ही जुनता
करते हैं। ८६ डौ मुख्यार्थ ने निबंध की विशेषताओं को लची में राखकर निबंध की
परिनामता इस प्रकार की है- निबंध उस गाँग रचना को कहते है किसमें स्वतंत्र
गाँग के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विषय निजीकृत, स्वच्छंदता,
सृजन और समृद्धता तथा आवश्यक संज्ञति और संवेदना के साथ किया गया हो। ८०

डौ शूष्णिकरायण वाच्यों के अनुसार- निबंध शेष - पत का प्रतिपादन
नहीं करता। विन्यास सिद्ध नहीं करता वह मनोरीति विषय को अपने व्यक्तित्व के
रस से पुष्कर फूल करता है। वह विषय का लघु विषय करके नहीं लिखता वह पाठक
के साथ व्यक्तित्वा स्थापित करता है। २९ मध्यस्थ पिता के पत पर निबंध प्रायः वह
गाँग रचना है किसी विषय का वृत्तिकृत विचार का वैशिक भाव या विचार-
प्रकाश का कुम्भक राखक प्रकाश प्रस्तुत किया जाता है निबंध कहलाता है। २२ निबंध
में शेष विषयों की भाषाक साहित्य भाषा व व्यक्तित्व की व्यवस्थिता है।
उसमें एक निजीजन होता है, जिसमें शेष सबज के पाठक के साथ निकटवा स्थापित
कर लेता है। निबंध में शेष के व्यक्तित्व की व्यवस्थिता होती है। उसने इस व्यक्तित्व
के वाच्य पर शेष कपने निबंध में अपने कथन में सबजता सशक्त अनुरोध और प्राचीनीता
उत्पत्ति कर लेता है। २३ निबंध गाँग काव्य की वह विचार है किसी के शेष के स्वतंत्र
वाच्य में इस विश्व रूप जगत के प्रति अपनी मात्रात्मक तथा विचारत्मक प्रतिपादन
को प्रकट करता है। निवंच स्वाभीम चित्रण और निश्चित अनुभवताओं का सार, सजीव और गवाहत्त्र प्रकाश है। दारुण श्रीकेर्णाराज के मत से पारंपरिक और विचारों की प्रथान्तर तथा शैली की रमणीयता के योग से जिस नीचें साहित्य का प्रचलन हुआ उसे निवंच साहित्य की संबंधता दी गई। निवंच वह साहित्य रूप है जिसमें देश ने प्रतिपध हैं। निवंच वह साहित्य रूप है जिसमें देश की अपनी रूढ़ि, मानवता और विचारों की सहजता अभिव्यक्ति की हो। निवंच वह एक साहित्यिक और क्रियांगत गति रहता है। जिसमें देश की विचार या विचार से प्रभावित होकर अपनी माण्डल में आपने पार्टीया या विचारों की विचार तथा प्रतिपधियों का ऐसे सजीव दुःख से व्यक्त करता हुआ पाठक की मनोवृत्तियों को संपन्न करता है। निवंच वह एक साहित्यिक और क्रियांगत गति रहता है। जिसमें देश की विचार या विचार से प्रभावित होकर अपनी माण्डल में आपने पार्टीया या विचारों की विचार तथा प्रतिपधियों का ऐसे सजीव दुःख से व्यक्त करता हुआ पाठक की मनोवृत्तियों को संपन्न करता है। निवंच वह साहित्यिक और क्रियांगत गति रहता है। जिसमें देश की विचार या विचार से प्रभावित होकर अपनी माण्डल में आपने पार्टीया या विचारों की विचार तथा प्रतिपधियों का ऐसे सजीव दुःख से व्यक्त करता हुआ पाठक की मनोवृत्तियों को संपन्न करता है।

बारूँ स्थायीमुद्रदास ने निवंच की परिभाषा करते हुए कहा है कि: "निवंच गवाहत्त्र साहित्य की वह विचार है जिसमें देश की माण्डल का सहजता मान्यता एवं वास्तविक विचारण करता है। दारुण प्रभावर भाग के अनुसार निवंच में भांत काव्य के लिए जिलस के सहजता पराक का प्रकाश है। निवंच रोत्य है, संस्कृत है, पत्र नहीं है, गवाहत्त्र है, यात्राधर्म कहीं है विचार या अर्थ हुकुम न होकर भी यह सकल संग है। उसमें सबके साथ विशेष रूप से अनुसार निवंच एक प्रकाश का सहजता माण्डल है। दारुण स्थायीमुद्रदास के अनुसार, निवंच एक प्रकाश का सहजता माण्डल है। स्थायीमुद्रदास में पाठक के भाव की वास्तविकता किन्तु होता है। एक निवंचकार के पास ऐसे सच्छता कुहर ही न्यून होते हैं जिसके बारे में पाठक के मन में रहता मिताता किन्तु होता है। एक निवंचकार के पास ऐसे सच्छता कुहर ही न्यून होते हैं जिसके बारे में पाठक के मन में रहता मिताता किन्तु होता है। एक निवंचकार के पास ऐसे सच्छता कुहर ही न्यून होते हैं जिसके बारे में पाठक के मन में रहता मिताता किन्तु होता है। एक निवंचकार के पास ऐसे सच्छता कुहर ही न्यून होते हैं जिसके बारे में पाठक के मन में रहता मिताता किन्तु होता है। एक निवंचकार के पास ऐसे सच्छता कुहर ही न्यून होते हैं जिसके बारे में पाठक के मन में रहता मिताता किन्तु होता है। एक निवंचकार के पास ऐसे सच्छता कुहर ही न्यून होते हैं जिसके बारे में पाठक के मन में रहता मिताता किन्तु होता है।
स्वयं ढेक से सम्बन्ध ही। ब्रजभूमि और गंगानगर का संज्ञापन और घुर परिणाम
निवार्थ है। 30 हाँ कृष्णालाल का मत है किंतु किसी प्रकार निवार्थ के दर्शन वही होते हैं
जहाँ ढेक बप्पे ध्यान की प्रतियापन विषय की चर्चा के भीतर ही अपने ध्यान की फल
दिखलाना वोहता है। ध्यान के यह फल कितना स्पष्ट भी नहीं होती और यह
किलकुल अस्पष्ट रहे रहे पता भी नहीं होता।

निवार्थ की परिप्रेक्ष्यात इस तरह चेत हिस्सी है और बहुत कार्यात में है परस्पर
विरोधी विद्याक मद्य है फिर भी उन सबकी विशेषणा से हम निम्नलिखित निष्कर्ष
पर पहुँचें है।

(a) निवार्थ ध्यान की कृत्त्व का फल है, लगेंहन उसका मूल ध्यान-
प्रधान है। ध्यान प्रधान के नाते ध्यानीता निवार्थ में है।
(b) निवार्थ का शाक्त विश्वस्त्र या सीमित होता है। विश्वस्त्र का
ताल्म भी है सुस्थित, संपूर्ण और सुसंगठित शिल्पियो।
(c) निवार्थ के न तार विश्वम सीमित होते है न उसकी दोही-दोही एक
 शैली है। निवार्थ की स्पष्ट जात और जीवन पर न तो दशकीकर
 दृष्टि होती है, न तो राजनीतिक, रूप, राजनीतिक या उपयोगका
कार की।

संस्कृत में निवार्थ एक अत्यंत सीमित रंज गाय सियुना है जिससे कार्यकरण की
वृत्त के साथ विवार निवार्थ होते है और उन विवारों में ध्यान की स्पष्ट झाप
होती है।

निवार्थ के प्रकारः

निवार्थ के प्रकारों के विद्यार्थी में बहुत पत्रमेद है। दर्द, शैली आदि
के लार्यार पर विवार पद किए गए है। फिर भी प्रधान रूप से विद्यार्थी ने दो पदे
स्वीकार किए है।
विषय प्राप्तन निवाचन
विषयीप्राप्तन निवाचन

विषय प्राप्तन (Objective) निवाचन में किसी वस्तु या अन्य को निवाचन का विषय काया जाता है। इसके प्रायः दो मेध किए जाते हैं -

(क) वर्णनात्मक (Descriptive)
(ल) विवरणात्मक (Narrative)

विषयी प्राप्तन (Subjective) इसमें स्वयं की ही निवाचन की विषय सामग्री काया जाता है। इसके तीन मेध किए हैं -

(क) विचारात्मक (Reflective)
(ल) मानात्मक (Emotional)
(ग) लोकप्रिय (Personal)

विषय प्राप्तन निवाचन में विषय की प्राप्तनता रहती है और विषयीप्राप्तन निवाचन में व्यक्तित्व की। विषय में तत्स्थता में वार्ता जार्जी पर शैली में व्यक्तित्व कलात्मक स्थायी है। यदि विषय में एक और जड़ी विषयक, सामूहिक, अनुभव सम्बन्धित वा विचारात्मक होता है तो वह दूरस्त और लेखक की शैली में प्राणान्तिता, सार्वजनिकता, बालबुद्धिकता आदि में उसके व्यक्तित्व की खास श्रेणी महत्त्व प्राप्त करती रहती है।

वर्णनात्मक:

किसी किसी वस्तु, दृश्य, स्थान आदि का वर्णन पाया जाता वह वर्णनात्मक निवाचन होता है। इसमें विशेषता रूप से प्राकृतिक वस्तुओं, नदी, पहाड़, टुला, जंगल, दृश्य, त्योहार, रहन-सहन, बैठना, गायत्री, मायासम, समा-सम्पत्ति, तीर्थ स्थान, मेले-माले, आदि का वर्णन रहता है। वर्णनात्मक निवाचन में विषय का तरल तथा परिवेशप्रभाव घात से वर्णन करना ही लेखक का प्रयत्न उद्देश्य रहता है। जब के बाद-से विवेक तथा प्रकृति के मनोरंजन दृश्य तथा स्पष्टता के वर्णन करने में उसकी प्रकृति उपलब्ध रहती है। मनुष्य द्वारा निर्मित क्ष्या किसी भी प्राकृतिक वस्तु के विषय में जानकीर्त्य के वर्णन सारणी तथा उसके अनुयाय वर्णन कार्य में उसके विशेष सहायत को होता है। वर्णनात्मक निवाचन में -
पतिर कः भवत तदनि स लक्ष आप लोक तया कल्पना का ही लक्ष शहारा लिया जाता है। उसमें वर्णन दो प्रकार का होता है- स्वयं घर और दुसरा घर। दुसरा वर्णन में लेखक वर्णकृत्तु को स्फूर्ति रूप में देखता है उसका उसी प्रकार वर्णन करता है।

इसका कल्पना का सहारा न लेकर द्वाराभवेय वर्णन की वौ लेखक की दृष्टि लक्षित होती है। पर स्वयं वर्णन में लेखक कल्पना के स्वयं पर्ला पर बैठकर द्वाराविश्वास का रूप हृदयप्राप्ति तथा चित्र की समक्षल रूप में देखा वर्णन करता है जो पाठक को भी कल्पना-लोक का प्राणी बना देता है। स्वयं वर्णन में पाठक की कल्पनाशीलता के विकास के साथ-साथ उसके हृदय की श्रमिकता का दैविकी भावना भी मिलता रहती है। निरोधणता यह है कि इसमें नकार का पैर, स्वयं का बहुताय चित्र, सप्ताहता राशनिक, फेकेट डीन-गरीबी वुल्हरी, लौही तेलका हुआ क्षिति हुई, फात भुर छाए, नाजुक हुआ बंडर बादी का ऐसा चलता-पिराता चित्र अद्वित तित्रों और वर्णनों के द्वारा अर्थों के साथे लाता जाता है कि हम बढ़ते हैं के तहत शान्तिपूर्व हो जाते हैं। ऐसा लगता है कि वह वस्तु सामने है। ऐसा प्रकार के निरंजन में कह्व के साथ ही कल्पना तत्त्व की भी प्राणनता रहती है। लेकर की दृष्टि ऐसी पैरी बन होनी चाहिए कि वह उसके व्यापक में बैठकर उसे भाषानार देख सके। यदि उसका द्वाराभवेंक वर्णन नहीं हुआ तो उसमें सूक्ष्मता कराने न का संकेत। इसमें पाठनी और वास्तविक तत्त्वों के साथ कुछ तत्त्व का सूक्ष्मता होता है। इसमें लेखक पाठक के हृदय में, दृष्टि में उस वस्तु को ऐसा प्रकार प्रस्तुत करता चाहता है कि प्रकार अतिक्षित किश्र ने पतिरिक के पतिरिक में दिखी वात को नासा-प्रकार के से समान-द्वारक करता स्तव करता चाहता है। वाजक्षण प्रवृत्त, टाकुर नामान लिंग, मार्ग-साद सिंह, क्रृष्णा बब बब्बे वर्मा, बब्बी जी, कुलावराय, कर्महासाल दिन प्रमाणक, महादेवी वर्मा बाबदी ने ऐसे निरंजन लिखे हैं।

विवरणात्मक:

किसी किसी शैलिकात्मक घटना, कथा या वृत्तांत का विश्वस्त वर्णित है वह विवरणात्मक निरंजन कहलाता है। यह कालगत होता है। इसमें गतिमान तत्त्वों के वर्णन व विवरण फिरते हैं। इसमें शैलिकात्मक, पौराणिक तथा मानविकों के तत्त्व चार्ज
पिछले। उसकी श्रीमान भावन तक विश्वास नहीं होती। पाठक उसकी सूचना में अन्त से तक चला जाता है। यादा, उत्सव, परिवार, महापूर्ण जीवन की बीतने में दुःख आदि के विवरण व्यस्त मिलते हैं। इतने कल्पनात्मक की विश्वासता रहती है पर अनुपस्थित एवं तक्षण की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसके तत्स्थ रूपक विवरण प्रस्तुत करता है। परन्तु उसमें उसके आत्मविश्वास आवश्यक है। निबंधकार उसमें रागाहात्मक का संपस्थार और क्यात्मक शैल का आत्मवैज्ञानिक है, ताकि पाठक विश्वास न हो। विवरणात्मक निबंध में कथा की प्रशासनता होती है, क्योंकि उसमें घटनाओं के कुर्सिक वर्णन तथा विवरण को नवन व्याख्या दिया जाता है। इतिहासकार घटनाओं का व्यापक तत्स्थ होकर करता है उसमें विस्तार के बाद में विशेष कथाओं, घटनाओं, यूं, यात्राओं, सामग्रियों, राजारूपियों, लोगों के परिसर का क्रम से उल्लेख करता है। यही कार्य इतिहास- कार का भी है। परन्तु दोनों में कार्यकाल तथा रचना पद्धति का रूप प्रकाश करता है। इतिहासकार घटनाओं का व्यापक तत्स्थ होकर देता है, वह अपने व्यक्तित्व को घटनाओं के सूचना सूचना उठाते रहता है। विवरणात्मक निबंध में कल्पना तथा भाव की प्रशासनता और विवरण का गांठना रहता है। इतिहासकार का दृष्टि क्षेत्र अभिव्यक्ति की बौद्धिक होती है और विवरणात्मक निबंधकार का दृष्टि अन्तर्राष्ट्रीय अभिव्यक्ति की बौद्धिक होती है। इतिहास में कल्पना का उपयोग नहीं होता, जबकि विवरणात्मक निबंध में कल्पना तथा भाव दोनों की अपेक्षा होती है। वर्णनात्मक तथा विवरणात्मक निबंध में प्रमुख बन्तर यह है कि प्रभु में निबंधकार साहित्य के उपयोग के द्वारा एक चित्र दिखाते हैं। वर्णन क्रान्त का प्रमाण करता है और इस प्रकार वह चित्रकार के निकट पहुँच जाता है। परन्तु दृष्टि के एक विवरण का क्रम से पाठक के साथ रहना जरूरी है— और इस प्रकार वह चित्र को स्पष्ट रूप में उपस्थित न कर उसे गतिशील रूप प्रदान करता है। वर्णन और विवरण को भिन्न वस्तु है।

वर्णन कह भव्य कथा वैचार, प्राकृतिक कथा मनुष्य निर्मित क्षमित भी वस्तु व्यक्ता पदार्थ का होता है। वर्ण वस्तु से उसका गहरा सम्बन्ध रहता है, परन्तु विवरण में घटनाओं के कुर्सिक उल्लेख को ही विशेष महत्व दिया जाता है। इतिहास शायद वर्णन।
का विभिन्न सम्बन्ध के से रहता है तो विभिन्न का कारण निष्कासन के लिए विशेष रूप से यह कहा गया है कि वर्णितक निविभ्य एक वर्णितक विभिन्न के संबंध के समान है, जिसकी दशाएँ स्वभाव दर्शक विभिन्नता से रह जाता है तथा वह उस वर्णितक विभिन्न की शास्त्री उसमें आंदोलनविलीन हो उठता है। बख़्चिसे विभिन्नता वर्णितक निविभ्य एक चारू- चलचित्र के समान है जो वह पाठक के सम्पूर्ण विभिन्नता रूप में प्रस्तुत होता है। विभिन्नता वर्णितक निविभ्य वर्णितक निविभ्यों की शास्त्री वक्तव्य वर्णितक विभिन्न होते हैं। ये निविभ्य जीवनी, कलाकृति, संगीत, पुरातत्व, संस्कृति, वाङ्गमय, विज्ञान जादी विषयों को लेकर जीवन रहता है। इन निविभ्यों में व्यास व नानाधीन शक्ति की प्रशंसना रहती है अतः यह उसमें सारखा व्यवस्थित है। तारामध्य इन निविभ्यों का प्रमुख व्यास है। महाकवी नानाधीन विश्वसनीय, विज्ञान जादी, वस्तु की, त्रिराम शास्त्री जादी व्यास के निविभ्य हैं।

विचारात्मकः

इन निविभ्यों में वेदांतिका की प्रशंसा होती है। इस प्रकार के निविभ्यों के लिए गंगीर अर्थमन, मनन, चित्र व अनुभुति की प्राण्यां वास्तविकता होती है। इन्हें शास्त्रिका का प्राणायम एवं दुःखलत की प्रशंसा होती है। वाणिज्यिक, वाणिज्यिक, साहित्यिक, सामाजिक, मनोविज्ञानिक, समस्यापूर्ण वाद्य विषयों पर कल्पना विचार लिखे गए हैं। इनमें तत्त्वज्ञान व चिकित्सकों के आधार पर विचारां को व्यक्त किया जाता है। वेदांतिका का शहर लेना पड़ता है। उन्हें साथ पाना व अनुभुति का विषय रहता है। इस प्रकार के निविभ्यों में वात की वारीकी, तद्वित्त की योजना विचारणा के ढंग के अनुसार लिखे गए हैं। विचारां में तारामध्य वास्तविकता रहता है। अनुभुति उसमें वास्तविक न रहता है। विचारां का गठन व कसरत अनुभुति वास्तविक है। लग्निक दुःख जी शुद्ध विचारात्मक निविभ्यों का उत्कृष्ट वही माना था, कार्य एक-एक पाराग्राफ में विचार द्वारा को गए थे, अतः एक-एक वाक्य किसी समस्या विचार संद को लिखे ही हैं। विचारां का प्रारंभ दूर हो नहीं चाहिए। एक के बाद एक वे ऐसे संशिष्ट एवं सम्बन्ध हो जिसे तक पाठक उसे फूलता को जाय उसका अंतम निर्णयक तहसून हो। कम
देने का शब्दाओं में क्रिया तथा विचार व विषय सामग्री होनी चाहिए। पंडित नारायण-प्रसाद किशोर जिन निबंधों में बुद्धि व हृदय का समान योग है वे ही हुए विचारात्मक निबंध कहे जा सकते हैं। ऐसे ही निबंध हुए साहित्यिक निबंध होते हैं। विचारात्मक निबंधों की एक प्रमुख विशेषता है मानणे सम्बन्धी हुलता तथा उसके अभिव्यक्तिशक्ति को विकसित करना। विचारात्मक निबंधों में अंग गतिशीलता तथा सुविधा विचारों की हुलता के साथ-साथ मानणे की लपेटाकर अभिव्यक्ति गमर, व्यक्तित्व समान तथा व्यावहारिक होती है। इसके विपरीत इन निबंधों में मानणे तथा विचारों को व्याख्या होती है जिसे मानणे की अभिव्यक्ति शक्ति को विकसित होती है। यदि इन निबंधों में विचारात्मक की ही प्रशान्ति रहती है तर्क रागत्मक तत्त्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

इस प्रकार के निबंधों में महावीरप्रसाद किशोर, विश्वनाथ, हरिभाँव उपाध्याय, आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल, डा० हजारीप्रसाद किशोर, जैनेन्द्र वासुदेवराण व्यवहार, धनपंडु जोशी शादि हैं।

मानवत्मक:

मानवत्मक निबंध हृदय की कस्तूर है। उसमें मानवों की प्रशान्ति रहती है, दुःखित गौण होता है। रागत्मक तत्त्वों की प्रशान्ति के कारण संज्ञा निबंध उसमें प्रभावित रहता है। अंतरात्मकताओं, तीन मानव तथा मानुकात्मक साधन विशेष इन निबंधों में मिलता है। हार्दिक शुभ-दुःख, आनंद विलास, सुंदर-दुरुस्त, लाभार्थ-विकारिण, यमत-सुखरोध का रूप स्वरूप विशेष इन निबंधों में होता है। स्वभाव, प्रकृति, मनोविकार, शुभ-दुःखात्मक स्थितियों की प्रतिक्रियात्मक व्यक्ति वादि से समाप्तिमा निबंध स्वतंत्र प्रकार के होते हैं। इन निबंधों में कई धार गए कौशल का साहन्द मिलता है। निकायकार, निरंजनता इनके मुख्य लक्षण है। संगीत की सी प्रमाणन्यता में मानवों का ऐसा अंकन रहता है कि वे ही मानव पाठक के हृदय में ही जागृत कर देते हैं।
उसे रसमय बना देते हैं। मानवत्मक निबंध का ठीक अपनी मानुकात्मक, नरसंहारी सजीव
माणा शैली और मावानुकूल उसके उतार-बूझ की सहायता से पाठक को प्रयास
प्रभावित करता है। लेकिन की लक्ष्यता नम्मता उसके रागात्मक कथन को प्रभावशाली बनाती है और उसकी सत्यता पर कतैकति है। निर्विकार जगती मावानुकूलिन्या से संबंधित होता है। मावात्मक निर्विभंग में बुद्धि की अपेक्षा रागभूमि की प्रभावता रहती है जिस प्रकार विचारात्मक निर्विभंग का सम्बंध मस्तिष्क से है। उसी प्रकार मावात्मक निर्विभंग का सीञ्च सम्बंध है। मारतेंदु युग में मावात्मक निर्विभंग की रचना प्राचीन पद्धति के आधार पर हुई। जारतेंदु बाबु हरिश्रन्दु मावात्मक निर्विभंग के पर
सुविधाय प्राप्त हैं। मारतेंदु जी ने तथा उनके समकालीन निर्विभंगार मावात्मक निर्विभंग के लंगित गद काव्य, गद गीत, वैष्णविक निर्विभंग, संस्कृति, हास्य व्याख्यात्मक निर्विभंग, वृद्धार्थक प्रकृति आदि का समावेश किया जाता है।
इसमें विचार की अपेक्षा माणा का अविनाशित प्राचाण्य रहता है। लेकिन परस्परी अपेक्षा मावात्मक का अविनाशित प्राचाण्य रहता है। इस वर्ग के निर्विभंग में लेखक का उद्धेष्य भावविवेक
तथा उस का संचार करना होता है। यह विषय से सम्बंधित वृद्धि का विवेचन
मावश्चित्त के प्रांग में हुआ तथा विचारालय करता हुआ मावश्चित्त पूर्ण कविता निर्विभंग का आदि में करता है। इस वर्ग के निर्विभंगार में मारतेंदु हरिश्रन्दु, बालकृष्णा
पुट, प्रतापरायण मिश्र, बालमुकूंड गुप्त, मावप्रसाद मिश्र, सरदार पुरुषोत्तम, विश्वनाथ हरि इनके अविनाशित निर्विभंग वसी कैश्य के हैं।

आत्मपर्यावस्था:

जिसे आपकी में सबका ऐसे कहते हैं उसे हिन्दी में आत्मपर्यावस्था या व्यक्तिवादी निर्विभंग कहते हैं। निर्विभंग का यह प्रकार सज्ज, प्राणपत्र और विज्ञान होता है। यथापि मावात्मक और विचारात्मक निर्विभंग में भी निर्विभंग का विषय "व्यक्तिवाद" को रखता है परंतु यह प्राणपत्र उसमें स्वस्थल ही नहीं है। व्यक्तिवादी निर्विभंग में निर्विभंग का स्वयं से अन्या पढ़ता है। स्वयं का विषय साम्राज्य बनाना पढ़ता है। उसमें निम्न का मिला है। देना पड़ता है। इस प्रकार के निर्विभंग में अंक बार लेकर अपने जीवन के
प्रत्येक क़ब्ज़ा के साथ ही जीवन की लेकर घटनाएँ, निवारण की यह प्रकार समाधित करता है कि उसका व्यक्तित्व प्रवाह जाता तत्व सामान्य हीकर भी कहा जाता है। इस निवारण में लेकर यह धेरी हुसान अथवा निवारण वैयक्तिक वारं विवरणार वारा प्रस्तुत की जाती है। उसकी जानकीयता, उसका जीवन बंध जीवन की दृष्टि ही इस निवारण का विषय बनता है। इसमें अनलक की छतरी गहरी बायाती रौंदा श्रीमाती जाती है कि न ि लो वह मिलती है और न दुसरे से मिलकर मिलती है। उम्मी क्रिया-उतारण के कारण पाठक को देख से ही दिल जाती है। इसमें "व्यक्ति" के सम्बन्धि सभी पाव, तत्व, आधुनिक, विश्वास, गुण-धुना, विभेद-विवेचन मिल जातें। सांसारिक क्रिया-कृत्याण, पिता-पुत्र, कु-पुत्र बाद यसमें सामूहिक तत्वों के साथ चिन मिल जाते। इन्हें सिद्ध पाठक पाठक पुरुष में जातें।

व्यक्तित्वार्थ निवारण के लिए व्यक्तित्व रूप से जातक नहीं होती, कथा उदाहरण और कथा के विषय का प्रारंभ कर दिया और कथा भी लाकर कही दिया। उसमें युग, व्यवस्था, वगैरहरु का नाम का प्रायः अभाव रहता है। दैव वाराप्रारंभ लिखता चुठा जाता है। उसमें अखंडता-बन्ध-क्षणिक-सम्प्रति-पत्ता-तत्त्व-सम्बन्ध-विभेद, गुण-धुना-विभेद-विवेचन-मिल-बालक क्रिया की चंद लेखियां जिस प्रकार तथाकथा धेरी भी उन्हीं क्रिया की कार्यक्रम के साथ कही रही। विषय कोट्र हो एवरेस्ट की जोडी या सांप की बाबी, अथवा उदाहरण का विश्लेषण का मानना के लिए संकट या लोकों और नमूना के कारण रात का जागरण, पाठक की रूप को दैव की प्रतिकृतिया, उस प्रतिकृतिया के प्रकाश में उसकी चेतना, उसके समूही व्यक्तित्व की पारंपरिक-सन्दर्भ में उसके व्यक्तित्व के प्रकाश में होती है। व्यक्तित्वार्थ निवारण की सफलता इसी पर निर्भर रहती है कि वह उदाहरण से यथार्थ अन्य निवारण के लायक बनाये। इस निवारण में विवेचन और बालाक्षण की जान व्यास-विनोद, हास्य-उल्लभ-वैभव, वनस्पति, बालाक्षण के कारण की उत्कृष्ट रहती है। व्यक्तित्वार्थ निवारण की छुट्टा उत्कृष्ट कहै होती है। दैव किस बात को उत्कृष्ट सम्पत्ति उसे स्वच्छन्दता-युक्त शक्तिभार प्रतिकृतिया करता है। वह विषय और सिद्धांत के समीप में नहीं पहुंचा। इस श्रीस्त्री का नवारण समस्त सांसारिक क्षेत्रों, विषयों, संस्कृति को अपने दृष्टि-कोण से देखता है। उसकी तुलना से ताजहत दिखाई देते है। इसमें विषय को पहला न देखकर
व्यक्तित्व का ही महत्व होता है। व्यक्तित्व से सम्बन्धित होने के कारण व्यक्तिशास्त्र का युक्त बावजूदक है। गर्व राजकार्य एवं पायथ्रणी होता है। व्यंग्य भी रहता है। उसकी अपनी कल्याण घातकी है। उसी घातकी के अनुसार वह अपने मान्य को प्रस्तुत करता है।

हलित निबंध की परिभाषा:

वाचार्य वाणीपेनी की के मनाहृदय का बायोक्री साहित्य में वैज्ञानिक निबंध एक प्रकार की गधरी व्यक्तिगत्राण रचना है जो मन की चित्रा या भावनाकुल दस्ता में निर्मित होती है। वह दस्तावें का मन उक्त की छहारता है। निर्मित उस्तान्य में विहार करता है। मनोत्तर मनाहृदय होने पर निबंध समाप्त हो जाता है। वैज्ञानिक निबंधकार किसी घटना, परिस्थिति, वस्तु, व्यक्ति बादल पर विषयं रिकें दुः कर्न मन की प्रतिक्रिया, प्रभाव, तरहें, लादी वैज्ञानिक विशेषणाओं को ही वक्त कहता है। उनके द्वृत्त रूपान्तर का निर्माण उसनें गोपाण हो जाता है। 33 त्री विज्ञान निभन के मनाहृदय में निर्मित लिख शैली में सम्पन्न जो लघुकी ते के वह को सल्ले कार स्पष्ट वातव्यक्ति दे किसमें उसकी निर्मित लाभानुकूल भावनाओं यो यौगिक चिन्तन पद्धति का प्रकाशन हो वह व्यक्तिवादी या वैज्ञानिक निबंध के जानकारी समाज, धर्म, प्रारम्भ या साहित्य पर शास्त्रीय प्रकृति प्रधान नहीं, निर्मित दृष्टिकोण पौड़ी चिन्तन यही विचारात्मक व्यक्तिवादी और वैज्ञानिक निबंध कहलाते हैं। इस व्यक्ति-वादी विबंध का तीसरा प्रकार वही वातपरक-समस्त निर्म या नियों परिचार में अन्वेषित व्यक्तियों या घटनाओं से सम्बन्ध या प्रेरित-उद्देशित और द्वृत्त वन्यकारण या विचारों का प्रकाशन रहता है। 34 त्री निभन की ने इस परिभाषा में व्यक्तिवादी निबंध के तीन भेदों को अति कि विचारात्मक व्यक्तिवादी, मानवता व्यक्तिवादी और वातपरक को चक्कर वैज्ञानिक निबंध की परिभाषित किया है। जब तीनतः के निखिल तत्त यहाँ पर पन्नाएँ निर्माता है व्यक्तिवादी निबंध की संज्ञा देता है। इस तीनतः में वातपरक, निकाता और व्यक्ति की प्रहान्ता है। हाँ विज्ञान मनाहृदय के कथामुखार में व्यक्तिवादी निबंध की कौशिकी में इन निबंध को स्थान देता हूँ निर्माता किसी तत्त्व या तत्त्व की स्थापना हिस्से व्यक्तिवाद सुध-दुःख, राष्ट्र-भाषा, त्याग-मूल्य के साथ
वैयक्तिक मात्राओं, अनुभवियों, मान्यताओं, और पदनामों को प्रमुख रूप से स्थान
प्रदान किया है। अपने जीवन का राग-विराग, कुण्डल-विषाण आदि की अनुभवियों को प्रयो
जए रहने निर्भर का ताना-बाना जुना जाना है उन निबंध में कि वह आत्महिंदक था भला
व्यक्तिनाम के १५ वां वर्ष के महात्मार व्यक्तित्व प्रभाव निबंध के सम्बंध में यह वात मात्र निर्धारित थी
पान ही गया है कि वह आत्महिंदक का ही साधन है। आपः वाहे कौन कहा विधाय हो, विधाय की आता हो इसमें व्यक्तिप्रभाव-
“फूल टिटे” अवश्य होना चाहिए। क्या प्रकार भीति में( २५) तीक्ष का
व्यक्तित्व स्थिर पक्क से जा जाता है उसी प्रकार निबंध में व्यक्तित्व स्थिर अवश्य रहनी
चाहिए। ३६ आज के निबंध में व्यक्तित्व व्यक्तित्व का क्या तीक्ष के दृष्टिकोण की
स्वतंत्रता समझी जाती है, शैली की चच्चता तथा व्यक्तित्व स्थिर धार्मिकी की आज के
निबंध की मुख्य विषयता है। द्वारा क्षेत्र व्यवस्था को तकनीक गत रचना है जिसमें तीक्ष कही विधाय या विधाय का प्रभावित
होकर अपनी मात्रा में अपने भारू का विधाय की तथा प्रतिक्रिया की इसी
सजीव ढंग से अपकर हुला पाठक की पाठकियों ही की सातत करता है कि वह दुख
काल के लिए प्रभावित होता रहे या विधाय करता रहे। ३७ द्वारा गुलाबराय की
अनुसार इस प्रकार की विधाय का विषय व्यक्तित्व होता है। इस निबंध प्रायः मात्रात्मक
होता है कारण संस्कृति के द्वारा कुछ मात्राराया की ज़रूर होती है। वे वात्मकात्मक
होते है, पर वात्मका नहीं होते। इसमें निबंध का निरीक्षण और उनकी तथा स्वच्छन्दता
होती है। वे सजीव निबंध में वैयक्तिक गुलाबी कर्त्ता, मलिनाच्युत, सफलता, आगलादों
की मात्राव्यक्ति की परम्परा करते चलते हैं। ३८ द्वारा विद्वानों का महात्मा के महात्मार व्यक्तिनामी
निबंध भी के “यादिन भरे” का भी इतिहास अन्वय है। इसमें तीक्ष हल्की-फूली
मात्रा में सामूहिक विषयता पर अपने भारू का प्रभाव करता है। ३८

बुझकि निबंध कोई प्रयत्न या धारणा नहीं, बल्कि एक सत्ता परिवर्तित और
कालांतर में विकसित साहित्यिक विधा है। इसलिए परिभाषा की सांगीतिकात्मक और
व्यक्तित्व तनाव हुकुर करते हैं। फिर भी हम इस दिशा में प्रयास करें, हमारी परिभाषा
के अनुसार-सुसंबंधत और स्थिरकर वातावरण के स्वरूप और पद्धति पर, किसी वस्तु या विषय के अपने संबंधी सम्बन्ध की जानकारी अभिव्यक्तित और ज्ञाति को अनिच्छित निर्देश करते है।

लक्षित निर्देश का स्वरूप:

वस्तुओं के निर्देश चाहे वह विषयत हो या व्यक्तिगत, व्यापारिक लेखन का सुझाव प्रतिपल्लि है। उसमें कविता और भावुकता दोनों के दृष्टि में होते हैं। विषयतम निर्देशों में कविता का उद्देश्य रहता है और भावुकतामूलक निर्देश मूलतः व्यक्तिगत निर्देश होते हैं। परंतु सब तो यह है कि निर्देश की किसी भी भूमि या परिस्थिति में नहीं बाध्य जा सकता। उसका वैविध्य इसी उसकी विशेषता की अनुभूति है।

विषयतम निर्देशों की ही है ताऊ उनका मीठा विषयत की ही दृष्टि से सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, नैतिक और सांस्कृतिक आदि क्षेत्र विभाजित मिलते हैं। सांस्कृतिक निर्देश भी विषयतम निर्देशों के अंतर्गत उद्देश्य हैं, परंतु उनके भी कई वर्गों के अन्तर्गत उद्देश्य हैं जैसे- सांस्कृतिक, नैतिक और सांस्कृतिक। मीठे मूलतः व्यवहारिक। अभिव्यक्ति या शैली के दृष्टि से हम निर्देशों को वर्णनात्मक, भाव्यतम, व्याख्यात्मक एवं विचारात्मक कोटियों में बाँट सकते हैं तथा इन तीनों क्षेत्रों के आधार पर उसकी तीन शैलियों को जा सकते हैं। उपरोक्त के विषयत है यह स्पष्ट है कि निर्देश का विषयतम रूप वस्तु और शिल्प दोनों की दृष्टि में जितना विकसित है। विषयतम प्राप्ति की प्रथम रूप से वाणिज्यक दृष्टि में विकसित होती है। शैलि तथा निर्देशों के निर्देशों को हेतु प्रमाण के अनुसार एवं युक्ति तथा उपदेश का अंतर्गत विकसित होता है। शैली के निर्देशों को हेतु प्रमाण नहीं प्रदान किया जाता है और फिर निर्देश से बात पूर्ण जाती है। इसी तरह बात-बात में बात कर नहीं जाती है। इसमें निर्देशों को अनुमति की घटनाशीलता एवं उसका प्रभाव मुख्य होता है। किन्तु विषय इन लक्षित निर्देशों में लेकर स्वयं पूर्ण होता है एवं अपने कौशल से पाठक से सहजदर्द्यात्मक
तादात्म्य स्थापित कर बात का प्रतिस्थापन एवं प्रतिपादन करता है। विषय कुड़ की ही परन्तु डेंकक की निजता उसे परोपकार कराते देती है। यही बात, इल्हाम या व्यक्तिगत निष्ठा के सम्बन्ध में ही कही जा सकती है। चंद्रकांता माता की तरह इल्हाम निष्ठाओं की कुलता विषय प्रस्तुति की हुई माता चरित्र ही देखी है। इसके कारण उम्र माता धन वेणुगीता (हिंदी) गो भीत तथा जल्द (फिल्म) से बहुत निकले हैं और पुनः उनमें ही झील बनाने जा रहे हैं। यह इल्हाम निष्ठा बंतुःद्री मात्र नै का केंद्र है। इल्हाम निष्ठाकर एक आदरक नहीं, गल्यात्मक नातक होता है। इल्हाम निष्ठाकर का अनुमोदन जयसेन "मेरे, "बुँद", "तबे को पारस रूप कर देता है। लस्के उसकी अभ्यस्तता और गौरपरायता का धार्मिक ही का जाननी समृद्ध हो जाती है। इल्हाम निष्ठाकर के कई क्रिया है जिनमें इल्हाम रचना की घमण्डा, सहृदयता, और रागात्मक बिमा चिर सर्वप्रथान है।

कवि, नाट्याकर और उपन्यासकर की तरह इल्हाम निष्ठाकर की एक विशिष्ट कवि क्षेत्र है, जिसमें इल्हाम की प्रौढ़ता होती है। वह न तो यह की मांति रूप का होता कर पाता है, न ग्रंथकर की मानति धमनाइक। एक दूर पिरो पाता है, और न ही यह गर्वीकर की तरह इन सवित्र में रहस्यमय कर गुरुद की जाता है।
उसके सामने वह तुष्टीमय ग्रंथ होता है, जिसमें उसे निर्देशों और अनुभूतियों के दोनों की ही इल्हाम बनाना पड़ता है। उसके समूह कोई स्वयं नहीं होती बल्कि कुड़ू बन्नें। वासा एक विशेष होता है। वह भी अभिनव उसे अनलेह होकर स्वयं अबात्मात्मा नहीं करनी पड़ती बल्कि एक दूरे फिसाफिस पाठकहँ तक पहुँचना होता है जो पाठ स्वीकारी घराने पर होता है। वह परमाणु घराने होता है और पाठक एक परमाणु बालक है। उसके इल्हाम निष्ठाकर वृत पत्र होते हैं जिन्हें पाठक व्यक्तिगत से पता नहीं है किन्तु उस्तु नहीं देते क्योंकि इल्हाम निष्ठाकर तथा उसके उद्देश्य में भी इससे हुपान्तरण हो जाता है। इसीलिए इल्हाम निष्ठाकर की सूचना प्रक्रिया में अनुभूति और विज्ञापित के चारण कहुछ एक साथ स्वयं समानाङ्ग स्वरूप है। इल्हाम निष्ठाकर की रचना प्रक्रिया में कहते कुड़ू बन्नें।
का माध्यम तेना पहुंचता है, जिसका राज्य विन्यास मुल्कः शतृवृतात्मक होता है। प्रतीतकाल्प एवं बिकृमकल्प कम। यद्यपि निरंतिर को बुढ़ि सं सन्नाय, एक हर्षरे के गुलङ्क हैं, सव विषाकृतहूँ एक-हर्षरे की न्युनाक्षरित पावा ही विषयिकाश्च एवं विषयिकाश्च की रचना प्रदान करती है। फिर भी विषयिकाश्च की रचना, कैली, का कोई निरंतिर समूह नहीं निरिक्षित किया जा सकता है और दूसरी बात यह कि उसका गर मनोहारी और आकर्षक होना चाहिए। व्यक्तित्व की भूमिति अपनी समस्त रांचिरा एवं रचना कैली का दीप्त करती कहे। ॥४०॥

हिंदी का व्यक्तित्व शब्द बनायजी “प्रतीतकाक्षरों” का परायणकारी है। साहित्य में व्यक्तित्व का बिचार रचना में प्रकट साहित्यकार के बिचार के संदर्भ में होता है। व्यक्ति की मनोहृत्ति, संसकार, सिद्धांत, भाषार-विचार, इंत, व्यवहार आदि आदि बातें व्यक्ति तत्त्व के साथ प्रभावी संबंध रखती हैं। मनोवैज्ञानिक प्रतीत की परिपातार्थ उपन्यासी-पृष्ठी प्रतिक्रिया से कही है, परन्तु इन सभी परिपातार्थों में प्राप्त कहर है। व्यक्तित्व किंवा व्यक्ति त की उन विशेषताओंकर एक संघर्ष है जो उसे दूसरे व्यक्ति से पृथक कर देता है। ॥४१॥ प्राकृत भाषाओं में विभिन्न मनोवैज्ञानिक बारा प्रयुक्त परिपातार्थों में व्यवस्थाओं का अध्ययन कर अपनी व्यवहार प्रकृति की है। व्यक्तित्व व्यक्ति में मनोवैज्ञानिक व्यवस्थाओं का व्यावहारिक संघटन है जो वातावरण के साथ उसके पूर्व कृपयोग का निर्धारण करता है। व्यक्तित्व की ही व्यक्तित्व होता है, जब व्यक्ति के बिचार व्यक्तित्व का ही नहीं सकता। व्यक्तित्व विवेक व्यक्ति की कल्पना ही निर्धारित है। हिंदी साहित्यकोश के बुधार जीवन में मूल्यों का सम्बंध व्यक्तित्व के स्नेता है जो मूल्यों की लाज करती है और उन्हें व्यवहारिक संघटन करती है। ॥४२॥ उसमें बन्यत विभा है-व्यक्ति के परिपात में दो बौद्धिक सम्मिलित है- एक तो उक्ती की आध्यात्मिक और दूसरी व्यक्तिक दृष्टिकोण से संरचना उसकी निजी परायणार्थ। आचार्य हजारिक्षाद के महानुभाव देवें तो निर्देशों के अनुसार होने का मतलब यह नहीं है कि उनमें बिचार व्याख्या न हो। संसार में हम जो कुछ देखते हैं वह दृष्टा की
विभिन्नता के कारण नामांकन से फ़्रूट होता है। प्रत्येक व्यक्ति की यहि हृदयान्तरी ने अपने विचारों को व्यक्त करने वाला निर्देशक का परिवार मूल बनाने की कोशिश की, और साथ ही उद्देश्य की सिद्धि भी हो सकती है जो साहित्य का चर्चा प्रतिपादन है।

व्यक्तित्वाधी निर्वंताकर को सफलता भी पर निर्माण रहती है कि वह अब ने अपने निर्वंत को जालीय बनाया। इन निर्वंतों में निर्वंता और निर्वंता की जगह व्यक्ति विनोभ, हस्य, व्यक्ति-विनोभ, मनोरंजन, बालविनोभ, रंजक का विनोभ रहती है। व्यक्तित्वाधी निर्वंतों की लघुता उत्सुकतावृद्धि होती है। त्यों जिस न्याय को उसका समर्पित है उसे स्वच्छ सत्ताधारी विपुलकृत करता है। बह विश्वास और सिद्धांत के अनुसार मे नहीं पढ़ने बालक भ्रमण करता है कि उसका प्रतिपादन सन्न निर्णय ढूँढ़ता है। अतः इस्राई की भी उपज का समर्थन करना बालिका। इस शैली का निर्वंताकर समस्त सांसारिक वस्तुओं, विश्वास और सिद्धांतों को अपने वृत्तिकृता के देखता है। अपनी तुला से तौलता है।

इसमें भाषा की विद्वान बालक के अपने व्यक्तित्व प्रकाशन की भी रहती है। निर्वंत रचना लेख की अपनी व्यक्तित्व प्रकाशन से सम्बन्धित है। इसमें विश्वास को पहचान ने अपने व्यक्तित्व का ही पहचान होता है।

इसमें निर्वंताकर कोई विश्वास बालक या नया सिद्धांत निश्चित पांव के लिए नहीं बालिका, वरन् अपनी नीच तिथि शामिल रहता है। इसमें लेख की निकट चिकित्सा, प्रतिक्रियाएँ रहती है। उनमें ही नहीं व्यक्तित्व है, वो सम्बन्धित होने के कारण मनो-वैज्ञानिक का पुट आवश्यक है। वह रचिकर रंज मात्रवृत्ति रहता है। इसमें व्यक्ति भी रहता है। उसकी अपनी लघु शायरी होती है उसी शायरी के अनुसार वह अपने पार्वत को प्रस्तुत करता है। निर्वंताकर निर्वंत में अपने व्यक्तित्व विचारों के विचार के लिए प्रस्तुत विश्वास के हटकर कली-कली विषयांतर स्थित करता है। वह विषयांतर या आंकता ऐसी नहीं होगी कि भीषण विषय एकमात्र यात्री के उत्तर विषयांतर की विश्वास करने का कारण नहीं रहता अपने व्यक्तित्व की जाप लगाने के लिए निर्वंताकर विषयांतर स्थिपत्त के लिए रूप देता है।
क्योंकि निर्वाचकार का लघु वो ज्ञान प्रदर्शन होता है, विशेष रूप से उसकी दृष्टि कहते ही कम रहती है।

"वात्सल्या कृतिकार" को भी जान जाना उचित होगा। कृतिकार अनुभव बस्तु की सत्यता जात्मास्त करता है परंतु उस पुनर्विरिति का पिकठा कौशर बदल चुका होता है और वह नैसर्गिक स्वरूप में प्रस्तुत होता है। यद्यपि कृतिकार अपनी सजीता में कुछ ऐसे उपादानांक समावेश करके होता है जिसके लायक उसे "विभाजन" का विशेषण है सकता है। परंतु जाने या नज़रन उस पर्याप्त वातावरण अथवा ग्रहण की स्पष्टता की सुरुचि से अनुच्छेद करना ही होता है। कृति पर कृतिकार की धारणा द्वारा शब्द में उसकी शैली है जो कभी भी दो लेखकों को नहीं मिलती। इस प्रकार कृतिकार कपने मीठे कुछ तुटें के बारे सजीता में कुछ ऐसे उपादानों का समावेश करके होता है जिसके लायक उसे अपने चित्रण का विशेषण है सकता है। परंतु जाने या नज़रन उस पर्याप्त, वातावरण अथवा ग्रहण की स्पष्टता की सुरुचि से अनुच्छेद करना ही होता है, कृति पर कृतिकार की धारणा द्वारा शब्द में उसकी शैली है जो कभी दो लेखकों को नहीं मिलती। इस प्रकार कृतिकार कपने मीठे कुछ तुटें के बारे में तनुजाय की पांचि अपनी तिक्ता को बुझ देता है। फिर हमारी सुपरिवर्तित हुष्टि उसे ही पर्याप्त यह बता देती है कि यह कृति कुछ शैली है, इस रूप में लेखक कपने को अभिव्यक्ति कर पाता है। यह तनह मैथी सुलिं, सहीनमुम्बितायुक्त तथा मानवनामो बातचित्तता के कारण ही निर्माण को विशेष साहित्यिक व्यक्तित्व प्राप्त हो सकता है।

लूकित निर्वंच के प्रकार:

लूकित निर्वंच की निमाश्चिति शैलियाँ काैँ जा सकती हैं—

(क) प्राथमिक पावतार्थिक लूकित निर्वंच:

| वैज्ञानिक निर्वंच, मानवकृतिक निर्वंच, छाराशेल, धर्मसार्थिक निर्वंच वादि। |

(ख) वितरिक पावतार्थिक लूकित निर्वंच:

| शैलिक, सार्थिक, बिचारात्मक वादि धूमिकारक लूकित निर्वंच। |
(g) गत्यात्मक लिखि निबंधः

रेखाशिरोपक्रम, क्षात्मक, संसर्गात्मक, जीवनभूमि, धर्मात्मक आदि।

(h) मिथिल लिखि निबंधः

क + ल और (g) के संयोग से युक्त।

(डॉ) निजीलः

प्रायथिम भावतात्मिक लिखि निबंधः

हम लिखि निबंध पढ़िं दुभुभाद्येव के अंगित बैनिक क निबंधः, मानविलासपरक निबंधः, चार-शेखः, और गर्द-प्रति निबंधः को है सकते हैं। इन्हें हम प्रायथिम भावतात्मिक (प्रायथिम भावतात्मिक) लिखि निबंधः कहते हैं। क्योंकि इन्हें कोई न कोई विचार वस्तु (धीम) कहा कोई न कोई क्षात्मक भाव ही प्रशासन: हुए हुए करता है। विरासतक में हिन्दी में नया लिखि निबंधः को एक दैवित्षय दृष्टिकोण पर्यंता शिलिः। मानवता से हिंदी निबंधः की नाटकीय शैली को प्रकट करके हास्य, व्यंग्य तथा समाज संस्कृति की उपजीवित्त बनाया। बालकुश्य मूर्त्त व बाणमुद्द भी अलूहुत गवशारासन में गत्यात्मिक मानवतात्मिक निबंधः होताः। हिंदी में हिंदी निबंधः के राजकुमार हिंदी के चार-शेखः, सरदार पुराँगिस्ह ये जिन्होंने गवशारासन हिंदी प्रायथिम भावतात्मिक निबंधः पढ़े हैं। उन्होंने मानवता की प्रथाना पर भैतिकता, सौन्दर्य और सत्य का समन्वय किया था। बैनिक निबंधः को मानवता भावता के लेखक के लिए इस विद्वान का रूपान्तर कराने हैं। हजारी-प्रसाद विद्वास्ते ने पुराँगिस्ह की पर्यंता को रैलियास्तिक, सांस्कृतिक फलक दिया। "प्रेमी जन्मपूर्वी, एक कुक्कु से मैंने, खिलौन के कुक्कु, वसन्त बोला गये। वे उनके प्रशासन: प्रायथिम भावतात्मिक लिखि निबंधः प्रायथिम भावतात्मिक लिखि निबंधः। रामश्वेत, बैरपुरी, कल्याणानाथ फिल रामासारः, तथा रामाश्वेत, विन्ध्याकरः आदि के हिंदी निबंधः के समान्य विशिष्ट लक्षण है। वे सभी अपने गत्यात्मिक लिखि निबंधः को कभी रेखाशिरो, कभी संस्करण, कभी कथा की विषयां में पिरारूते हैं, कभी मानवकृतार्थ प्रायथिम भावतात्मिक लिखि निबंधः
रहते हैं। जब है निवेदियों में व्याख्यातक वाक्यायत का समावेश हो जाता है, तब वे खिल उठते हैं। कहना चिन्तक और सहृदय के द्वारा लिखे गए निवेदियाँ में पूर्वित्त का वगन-करण कुपाल की मातृत्व और विष्णुकृत का द्वाराय ये बसती हैं, ही संदर्भ बौद्ध देवता जो प्राचीन मानवतात्मक लक्ष्य निर्देश शैक्षण के चार रेख प्रचार करते हैं। सामाजिक
जुनावियों का क्षेत्र, जामुनक्षेत्र, जीवन की जीतलेखा और कृतित्व की प्रशाखा के कारण "चार रेख" भूमि ही कम लिखे जाते हैं।

भावात्मक - भावात्मक लक्ष्य निवाचः

भावात्मक भावात्मक निवाचः की शैक्षण में निवंचक वित्तशीलता की अर्थ रूपस देये लाता है। यह वित्तशीलता तक के माध्यम से नहीं, सुहृदय के द्वारा उद्भासित होती है। इस वित्तशीलता में निवंचक का बहुत शान और गर्वी कुपाल का लाभार होता है। इस तरह लक्ष्य निवंचक अपने शान का लक्ष्य उपयोग और अपनी कुपाल का वुनिचारित कल्याण भी कर सकता है। इस स्थिति में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और विचारात्मक दृष्टि की लक्ष्य निवाचः के लक्ष्य तत्त्व के परिपक्त हो जाते हैं। हजारों प्राप्त दिवंदी ने लक्ष्य निवाचः में रुपात्मक रूप ऐतिहासिक बैलों का परिपक्त किया। इन प्राप्त निवंचकों के लक्ष्य व्यक्तित्व निवाचः, वालुकि दूरुत्रु, महाराजाधिकृत दिवंदी, माध्यमाधिक दिवंदी, पुनर्नवाचः कल्याण, आंतित्विद्वारे दिवंदी आदि की भी अपना -अपना विशिष्ट योगदान है। पुरातनों पोतियाँ
आके के कूल, अवध फिर बोरा गये, कृष्ण श्रवण से -चतुर्वारम लके, हुजुर बीजी दिसिके भावात्मक भावात्मक लक्ष्य निवाचः हरन्त्व प्राचीन में लक्ष्य द्वितीय शैक्षण पुश्चिम गई है। वृत्ताधिकार का प्रत्येक भावात्मक लक्ष्य निवंचक कहार प्रकृति के
विष्णु वारीसूत्र पृथ्वी, किसी टूके कूल, किसी कवि समस्त या किसी कथाकर राज-दि से कूल होकर कल्याण संस्कृति के रामरंग पर दिखाई बाला जाता है। इससे भावात्मक
लक्ष्य निवाचः के एक और वैज्ञानिक प्राप्त बाली शैक्षणी में तथा कुली और कुलिया पाठक है उन रस्सियों के क़साक्षात कूली गोपीनाथ की मस्ती में निहृत किया गया
है। संस्कृति और दिनासाह का बना दुन्दर नैल कराने की धारा में विधानसिद्ध मित्र
के भी वर्चस्वी हस्ताक्षर हुए हैं । स्वयं उनकी की दक्षिण में माहित्त है कि "विमल की हांदे में माहित्त है । वुल के फूली दाढ़ी में विमला जा का फल है । तुम वदन हम पानी में सांस्कृतिक अभ्यास ही उत्पत्ति है तथा वाणिज्य का पकड़ और वन्य जीव में गृह मौह तथा झुंगीनी की एकान्तिता की दुलिता के चाहन है । वाणिज्य का पकड़ में घरेलू के प्रशासकों के द्वारा रो रो की पुरातता एवं सुरूजा का मीठा समुदाय है । तो "बाहमरी" संघ मार्त्य संस्कृति के प्राचीन में दी सड़ी है । वैदिक ग्रंथ में श्रीराम तोमा और कुष्ठक संस्कृति के द्वार पर "संस्कृत" में लोक संस्कृति के उदार रूपों के दंग के प्रति अभ्यास की जपवाणिया है । उनके संग्रहों में "बाहमरी" जैसे प्रकृत निबंध हैं । इनमें कथित कथापादन अद्यतन में काफी बनता है ।

हर सिंघारे, वसले, चुना मनसी जाते, बादि ऐसे ही हैं । सज्जन: विषय-विशेष सिद्ध में संस्कृत साहित्य की पौराणिक तथा अध्यात्मिक मोदों की ठंग की तेज तेज तेज तेज की संवीत है, उनमें ग्रामीण सांत्यनालौक बौद्ध ज्ञानी वैदिक चिंतन की समानाङ्गत है ।

हास्य तथा गुड़ दोनों का सहसंस्त है । रामचरण केन्द्रीय संसार नाराज़ भी विमलार तथा रामचरण निष्टकर बाबू का भी सामाजिक वैदिक कैपेट के "लक्ष "निबंध" रचत हैं । वह केन्द्रीय-संरचनात्मक-शीलिंग ऐसे वाणिज्य "विनायक" में भी बहीं तरह के प्रागृहित एवं विदित भाषातैगतिक लखित निबंध हैं ।

गत्यात्मक लखित निबंध:

मानवतात्मक लखित निबंधों की दूसरी कैपेट गत्यात्मक लखित निबंधों की है।

केवल इनमें कथा, रैलीविरोध, जीवनी, संस्करण, घटना, वादि का तिलक, त्याग से संयोग होता है। एक जीवन चर्चा का समावेश लखित निबंधों का कल्पना करता है।

इन निबंधों में निबंधकार का गत्यात्मक या परेरा नायकता करने अनुभव होता है और
पाठक एक उद्धीपन विभाग का सहभागिता हो जाता है। इनमें कल्पित पाठक की उपस्थिति का बोध भी कुछ पुस्तक हो उठता है। इस केन्द्री में लिखित निबंधों में केवल आते हैं जो 'रेखांचित्र पर्के, क्यात्मक, संस्मरणात्मक, घटनायुक्त' वादि होते हैं। पुस्तकाध्यक्ष ने लिखित निबंध में 'व्यक्तिगत संस्मरण' का सामान्य हो जाता है, और स्पष्ट रूप से उन्हे व्यक्तित्व के साथ-साथ नीति की भी उद्देश्यता की, गोवर्धन पुष्कर ने लिखित निबंधों को प्रस्तुतिः 'लिखित' वक्ता संबंधालाभी मूल्यां से लिख चित्र संयुक्त कर दिया। गुरु-दयाल राकनाथ नामक पुस्तक में हजारों प्रीतिदी ने राकनाथ को साधकर पर गतिपत्तक लिखत निबंध लिखे हैं। अब यह उनके लिखित निबंधों में पृथ्वी बालकन है, उन्में रोमांटिक रागात्मक के प्रति आसक्ति है। गुप्त शाक्तिर की दावा है तथा येसक का मन बार-बार प्रभावित करता मुक्क टिकायती आकाश में हर तक उठा जाता है। इन निबंधों में अनेक अनुच्छेदों में उन्होंने प्राचीन भारतीय साहित्य, साहित्यिक दृष्टि, मिश्र या परिप्रेक्ष्य को पूरी तरह समकालीन स्वरूपित किया है।

बैल विभागिता सिद्ध की समानांतरता में भावनात्मक उपाध्याय के गतिपत्तक निबंध क्षेत्र में, जिनमें उन्होंने भारत के नगरों की जातियों के माध्यम से देख का सांस्कृतिक इतिहास लिखा है। उनके यात्रा संस्मरणों में भी गतिपत्तक लिखित निबंध की विशा है। गतिपत्तक लिखित निबंधों की सीरीज में गहरे वर्ण और रामबाण बैल बैरी के पौरा रेखांचित्र हैं। क्योंकि वे 'सुकं' विवेकानन्द भास्करा तथा प्रभावपक्षी शैली में होते हैं। राहुल सांस्कृतिक ने 'मुक्कलेस्त्र' तथा अपनी यात्राओं के विवरण में संस्मरण और रेखांचित्र का अनुठा समाकलन किया है। वेदवेद शूरवीर ने रेखांचित्र बौद्ध उद्दी कृतित समूह में जो गतिपत्तक लिखित निबंध लिखे हैं उनमें स्वयं अनुठा प्रस्तुत है। एक ज्यादा मन्त्रण में संस्मरण के जीवनीभूमिक गतिपत्तक लिखित निबंधों को 'दिल की बात' में संशोधित किया है। वे 'सुफी रंग' में रहे हैं उनमें रोमांसस्मरण द्वारा साहित्य की जाती
है। रवीन्द्र की वैष्णववादना उनकी सांस्कृतिक दृष्टि है उनके संस्मरण प्रभाव महत्व पास्तव के हुए पहली-लेखक पर्याय का और महान व्यक्तियों के चरित के किसी कोण का ग्लास्टरण कर देते हैं। जब समाज ने सुने वामी वना दिया,

में नहीं दिली गया और रोया, गांवी जी के साथ एक प्रारंभिक, विश्वी मुरु 
अन्नदुआ, शांतिनिकेतन, के-शिल्पुर, ती नूज़ खुश बाद आदि ऐसे ही संस्मरणात्मक चारखेल है। गुलाराय क के एक पुस्तक बनी अवकल सम्पर्क जीवनी मुख्य संस्मरणाय की 
सांद्र वैयक्तिकता है, किन्तु वे लक्ष्ट शेषीकार न होकर प्रभावित पक्षकार रहे हैं। रामचरण 
कीतापर ने द्वितीयापात पूर्वोत्तरी में लालचत्वरूण लक्ष्य का संचालन किया है। 

माटी की मूर्खी में संस्मरणात्मक एवं जीवनी मुख्य बैठाने वाले वर्णित निवंच है।

कैनीपुरी ने अपने रचनाओं में स्थाने शेषी का भी सौंक काँटा हरसित किया है।

कैनीपुरी ने अपने निवंचाओं में स्थानी : केतना और व्याप्तात्मिक जीवन के 
अनुभव की द्वारा है। लेख की निवंचकता, संस्मरण के सालीता तथा शेषी का 
कार कल्पकार थे लेखतां तथा उनके निवंचाओं के प्रारंभ है।

लक्षित निवंचाओं की मात्र हास्यप्रमाण बनाकर क्लासिक प्रभावितुता बाल्य 
बुद्धार नहीं छोड़ा जा सकता। फिर भी बुद्ध हास्यपुराण लक्षित निवंच मिलते हैं।

उस जनवात्री: काँटाओं, दुर्लभ कादिर से परेशान है। लेखकार वर्ण ने प्रासक और बेंगल, 
के लोगे शीर्षक समूह में मजाक का नतीजा, धूमधाम शास्त्री गुप्त कलाकार, कालाय 
और बुद्धार जैसे हास्यप्रमाण गल्यात्मक निवंच रखे हैं। द्वाराधार मदन ने अपने "सुगम 
तथा शास्त्रीय संगीत" शीर्षक समूह में कुछ निवंच "कुटुम्ब बोलना" ऐसे का है, "मिले 
तो पक्षतर मान, गुण निवंचन के वक्त, ऐसे की रचे हैं।

मित्रित लक्षित निवंचा:

मित्रित लक्षित निवंचा की तीसरी श्रेणी मात्रात्मिक में गल्यात्मक रेखाओं के 
मेल से बनती है। क्योंकि लक्षित निवंचक सुदृढ़ में कम ही मिलते हैं, प्रथम लय 
में हल तो नहीं
हिंदी में गल्पतालक ठहरते हुए निवासों के बाद, जिम्मेदार निवास की ही भर्ती प्रभावित है। भर्ती प्रभावित निवासों में सबूत गंभीरता और रस भावुकता का विचार-वस्तु एक गल्पतालक का भेंट होता है। इसमें से किसी एक की प्रभावित अभ्यास झुकने की कहार निवास के व्यक्तित्व का नया वातावरण भी करती है। वातावरण में बिंदी के निवास, नामांकन सिंह के "बलमुदे" शीर्षक संग्रह के कुछ निवास, इटूनाथ मदान के "कहीं न जाये कैद बाढ़ोचना" जैसे निवास, पुरुषोत्तम निवास मनोरंजन, केन्द्रीय मंत्रालय तथा वातावरण के व्यक्तित्व संग्रहों में यह वृद्धि का समाहार हुआ है। वातावरण में निवास कहार प्रभावित बाढ़ोचना का और बुद्धि होती है। इटूनाथ मदान, भाववादी उपन्यास तथा केदारनाथ शर्मा के लिपियाँ मिश्रित ठहरते निवासों में व्यक्तित्व जीवन की शिक्षा निकटता की, जीवन दृष्टियाँ की, दुरुपयोग तथा व्यवस्था की बदूढ़ा राजावादक उपचार मिलता है। भाववादी तथा मिश्रित निवासों के कुछ उदाहरण शांति मेहरोज़ा तथा अन्य चिपकन दादी के कृतियों का बुद्धि मिल जाती है। रामचरितमानस के खुद के गीत में संगीत के कुछ हास्य-व्यंग्य मिश्रित है। संसारचन्द्र ने भी हास्य के कहानी विनोदोधन सेवाओं की "हर्षक सूचनाएं" में लन्हारे दिन की दुरुपयोगी है।

मिश्रित:

हम ठहरावें लिंंगकर जान और घरना का दर्द नहीं बांध सकते हैं। यहाँ
भी अंतररधान होता है और हम निवंद्यों में डेल के तत्त्व के फ्रेश पाते जाते हैं। यहां उल्लिखित निवंद्यों की धौली श्रैणी बनती है। निःशेष। निःशेष में एक धार विचारों का निश्चित तारखाई होता है और दुसरे और वैशिष्ट्य का कहरू गुणमूलक। निःशेष वास्तविक विचारके तत्त्व के तत्त्व का बी ही पुट हिये हुए है। बल में उल्लिखित निवंद्य की सभी श्रैणीय का साप्ताहिक शरीक एक ही हो जाती है। वैष्णविक ज्ञान अनुप्राचिक-विश्वस्तु की तुलना के साथ-साथ उसके अलंकारित होकर निवंदकार के व्यक्तित्व का पूर्णकान्ती संग्रह, राहुल कैराज व्यक्तित्व, शिक्षित, निःशेष व्यक्तित्व दिखाये। विद्यासागर श्रमी, रामविलास श्रमी। (विद्यासागर याले) वाचार्य स्वाभाविक विश्वस्तु निःशेष विचारण श्रमी, वैष्णव भारती, (मानसवाद और साहित्य) तारा चन्द्र भारतके प्रमुख हस्ताक्षर है। वारधानीय अन्वेषण, मानसवाद व्यक्तित्व और व्यासीन प्रत्यय दिखाये की का उपेक्षा साहित्य भी स्त्री समाजवादी हो जाता है। रामविलास श्रमी भारतके निःशेष निःशेष दिखाये हैं और दिखाये हैं। राहुल कैराज के साहित्यिक निवंदक विचारण है। (सर्किरा तथा लोककथा विचारण) पर लिखे लोक कौटि के है। वाचार्य निःशेष विचारण श्रमी के "स्वाभाविक और श्रमी" श्रेणीक निःशेष में विचार तथा समीक्षा का बंधनीय योगदान हुआ है। कैराज व्यक्तित्व ने अपने निःशेष में हार्दिक,हार्दिक पक्ष के उदारांतर और क्षेत्रिक दृष्टिकोण द्वारा कौटिक साधारणकरण की भवती सिद्धि प्राप्त की है। रामविलास श्रमी ने तीन काम ने पुराना न्याय तथा न्यायकरण जातिक दिखाये में राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याओं की तैलिस्थित को दिखाया है। व्यासीन के हार्दिक योग की भारतीय श्रीनार, बंकराज के अनुप्राचिक अन्य निःशेषों में एक साथ कौटि के गुण निर्दारकर, निःशेष बेदिना और सांस्कृतिक निःशेष की विचारण मिलती है। निःशेष व्यक्तित्व सुकूल में वार्कर निःशेष जनता अपेक्षाकृत सही सम्बोधन द्वारा लिखि है। जब निःशेषों में सांस्कृतिक व्यक्तित्व का समानेस हो जाता है, तब वे दिखाये हैं। क्षेत्रविशेष और सही सम्बोधन द्वारा लिखि है के निःशेष श्रमी का बंधनीय, व्यासीन की मामला और व्यवस्थापित का व्याख्या हमें देखा है जो व्यासीन भारतीय के शरीर लेख प्रदान करते हैं।
निवास सुधार (सूचिका), आराधना हजारीप्रसाद झीवड़ी

साहित्य का साधन- हाथ हजारीप्रसाद झीवड़ी, पृ. १३३

हिंदी साहित्य का इतिहास- हाथ मानव पृ. ५८४४

लाउ दी अंतर्स्थान आफ जर्मनी यून फिलेटर-डब्ल्यू बैसिल वर्सीफार्ल्ड, पृ. ६०

रूपवान काली-श्री वामन शिक्षान कामटे, पृ. ५५६५

हिंदी के वैज्ञानिक निवास, श्री वल्लभ शुक्ल- पृ. ६

साहित्य संदेश कालग- ०६६६, पृ. ५७२३

विलियम हैनरी लड्डु- हाथ इंट्रोडक्षन टू दी स्ट्वैर आफ फिलेटर- पृ. ४४२

सीन हेनरिक- पृ. ४४२ (सूचिका से)

जै की प्रिमेटा- हिंदी साहित्य का वृहद इतिहास जयोदश भाग, पृ. ५५६ से उड़त।

विवध सिद्धांत और स्नोग- हाथ हरिहरनाथ झीवड़ी, पृ. ३२ से उड़त।

- झीवड़ी- पृ. ३३
- झीवड़ी- पृ. ३४ से उड़त।
- झीवड़ी- पृ. ३७ से उड़त।
- झीवड़ी- पृ. ३५ से उड़त।

रैन इंट्रोडक्षन टू दी स्ट्वैर आफ फिलेटर- विलियम हैनरी, पृ. ४४२

दि वाक्सफार्ड इंट्रोडक्षन इक्लैटरी- भाग- ३ पृ. ५१३

बाणी निवास, हाथ आनाधिकार सम्मा, पृ. ६

विंदी साहित्य का इतिहास- पृ. ६०५

काव्य के रूप- पृ. २२९

हिंदी गायत्री (सूचिका) पृ. ८५

हिंदी साहित्य में निवास के निवासकार- हाथ गंगा प्रसाद गुप्त पृ. ६ से उड़त।

हिंदी के ग्रंथकार और उनकी शैली- हाथ राजश्रीपाल सिंह चौहान, पृ. ५५

हिंदी साहित्य में निवास के निवासकार- हाथ गंगा प्रसाद गुप्त, पृ. ५५

हिंदी निवासकार-श्री मयानाथ निन्ह, पृ. १०
26- हिंदी निबंध का शैलीगत अभ्यास-डाता पु.60कण्ठ, पृ.२१
27- हिंदी गच्छ के विविध साहित्यकार तथा विकास-डाता क्षणल लघु पुनः कोनमित्र-पृ.२५३
28- हिंदी निबंध-पुिफार माके-पृ.०५०-२६
29- हिंदीयुक्तनिवंच साहित्य-गंगावरसिंह, पृ.०६७
30- सप्तिहासिक वाचार्य सीताराम चुकुवाड़ी-पृ.६७२-६७३
31- हिंदी साहित्य का इतिहास-वाचार्य रामचंद्र युक्त-पृ.६५६७
32- वारसय विमलद-विभवनाथसिंह फिरह-पृ.०७११
33- निवंचन्त निश्चय-वाचा नंदुलारे वाजपैये प्राकथ-पृ.०१०-१२
34- क्याणेन नक्षत्र के विनंच ३-१२-५६ के व्यक्तिली के से।
35- हिंदी साहित्य में निवंचन बाहर निवंचकर-गंगाघाट गुप्त, पृ. २००
36- साहित्य बाहर सिद्धांत-डाता तत्त्वं, पृ. २०५
37- निवंचन सिद्धांत बाहर ग्राम-डाटा हरिहरनाथ शिवदीक, पृ. ४३
38- हिंदी साहित्य में निवंचन बाहर निवंचकर-गंगाघाट गुप्त पृ. २१
36- -कवि- पृ. २१
37- गच्छगतक की प्रतिवेदना-पुपित करणापूर्वेक्ष्टु त्रिपाठी-पृ.३०.१०
38- हिंदीयुक्त साहित्य का शैली वन्दे लिखितकर-जे पीटी राजेश-पृ.३०५५.
39- हिंदी साहित्य कोज- धीरेन्द्र चन्द- पृ. ७५३
40- हिंदी निवंचन-डाटा गंगानाथसिंह सुग- पृ. ६६-६२